संक्षिप्त समाचार

आगरा सीट से बसपा की पूजा अमरोही... सीकरी से रामनिवास ने किया नामांकन

आगरा, एजेंसी। आगरा सीट से बसपा की पूजा अमरोही और फतेहपुर सीकरी सीट से रामनिवास ने नामांकन दाखिल किया। कुल सात नामांकन हुए। जबकि पांच लोगों ने पर्चे खरीदे। उत्तर प्रदेश के आगरा में लोकसभा चुनाव में नामांकन के दूसरे दिन मंगलवार को आगरा लोकसभा सीट से बसपा से पूजा अमरोही और फतेहपुर सीकरी लोकसभा क्षेत्र से रामनिवास शर्मा ने नामांकन दाखिल किए। इसके अलावा तीन निर्दलियों ने भी परचे दाखिल किए। उपजिलानिर्वाचन अधिकारी अनूप कुमार ने बताया कि आगरा सुरक्षित सीट से तीन नामांकन फार्म और फतेहपुर सीकरी सीट से दो नामांकन पत्र खरीदे गए। इस तरह कुल पांच नामांकन पत्र खरीदे गए। वहीं, आगरा लोकसभा सीट से सबसे पहले बसपा प्रत्याशी पूजा अमरोही अपने चुनिंदा समर्थकों के साथ वाल्मीकि वाटिका पहुंचीं। यहां भगवान वाल्मीकि की मूर्ति पर माल्यार्पण करने के बाद अपने प्रस्तावक रविंद्र पारस और अन्य बसपा नेताओं के साथ कलक्ट्रेट पहुंचीं। इसके साथ ही फतेहपुर सीकरी के बसपा प्रत्याशी रामनिवास शर्मा ने भी नामांकन दाखिल किया।

आज नहीं होंगे नामांकन दाखिल: उप जिला निर्वाचन अधिकारी ने बताया कि 17 को रामनवमी के अवकाश के कारण नामांकन पत्र दाखिल नहीं होंगे। 19 अप्रैल को नामांकन दाखिल करने की आखिरी तारीख है। इसके बाद 20 अप्रैल तक जांच और 22 को नाम वापसी होगी। सात मई को मतदान होगा।

नामांकन के दौरान सांसद-विधायक की पुलिस से नोंक-झोंक, हुआ हंगामा

हाथरस, एजेंसी। सांसद राजवीर दिलेर व विधायक सादाबाद प्रदीप उर्फ गुड्डू चौधरी पहुंचे, लेकिन दोनों ही जनप्रतिनिधियों को मुख्य द्वार पर ही रोक दिया गया। कलेक्ट्रेट में प्रवेश के लिए सादाबाद विधायक की पुलिस से नोकझोंक हो गई। काफी देर बाद कलेक्ट्रेट से एक फोन कॉल आने के बाद दोनों ही जनप्रतिनिधियों को प्रवेश मिल सका। हाथरस सुरक्षित लोकसभा सीट से भाजपा प्रत्याशी के नामांकन के दौरान 16 अप्रैल को फिर कलेक्ट्रेट पर नेताओं की पुलिस से तकरार हो गई। कलेक्ट्रेट में घुसने के लिए सांसद राजवीर दिलेर और सादाबाद विधायक प्रदीप उर्फ गुड्डू चौधरी पुलिस व प्रशासनिक अधिकारियों से नोंक-झोंक हुई। पुलिस ने सांसद व अन्य जनप्रतिनिधियों की गाड़ी को कलेक्ट्रेट से 200 मीटर पहले लगे बैरियर पर ही रोक दिया। इस कारण सांसद पैदल ही नामांकन स्थल तक पहुंचना पड़ा।16 अप्रैल को भाजपा प्रत्याशी अनूप वाल्मीकि का नामांकन दाखिल कराने के लिए सांसद राजवीर दिलेर, सादाबाद विधायक प्रदीप कुमार गुड्डू चौधरी व अन्य जनप्रतिनिधि कलेक्ट्रेट पहुंचे। शुरुआती दौर में नामांकन के लिए प्रत्याशी के साथ विधायक वीरेंद्र सिंह राना व अन्य लोग नामांकन स्थल पर प्रवेश कर गए। इसके बाद सांसद राजवीर दिलेर व विधायक सादाबाद प्रदीप उर्फ गुड्डू चौधरी पहुंचे, लेकिन दोनों ही जनप्रतिनिधियों को मुख्य द्वार पर ही रोक दिया गया। कलेक्ट्रेट में प्रवेश के लिए सादाबाद विधायक की पुलिस से नोंक-झोंक हो गई। काफी देर बाद कलेक्ट्रेट से एक फोन कॉल आने के बाद दोनों ही जनप्रतिनिधियों को प्रवेश मिल सका।

धारणा को तोड़ने की कोशिश में बसपा... हिसाब से भी ज्यादा मुसलमानों को दिया टिकट

लखनऊ, एजेंसी। बहुजन समाज पार्टी भाजपा की बी टीम होने की धारणा तोड़ने की कोशिश में है। मायावती ने इससे आगे बढ़ते हुए अब तक जो 55 टिकट दिए हैं उनमें 14 मुस्लिम हैं। जबकि बसपा ने भाजपा के कोर वोटर ब्राह्मणों में से भी 11 को टिकट दिए हैं। मुस्लिम बहुल सीटों पर रणनीति के तहत खुद प्रत्याशी देने में कंजूसी बरतने वाली सपा और कांग्रेस गठबंधन के कई नेता बहुजन समाज पार्टी पर भाजपा की बी टीम होने का आरोप लगाते रहे हैं। पर, बसपा ने कई सीटों पर ऐसे प्रत्याशी उतारे हैं जो सीधे तौर पर भाजपा की टेंशन बढ़ाने वाले हैं। बसपा की राजनीति पर गहराई से नजर रखने वाले प्रोफेसर गोपाल प्रसाद कहते हैं कि बेस वोट पर मंडराते खतरे को ध्यान में रखते हुए बसपा ने इस बार टिकट का वितरण रणनीतिक तौर पर किया है। जिसकी जितनी भागीदारी, उसकी उतनी हिस्सेदारी बसपा का नारा रहा है। मायावती ने इससे आगे बढ़ते हुए अब तक जो 55 टिकट दिए हैं उनमें 14 मुस्लिम हैं। यूपी की आबादी में मुसलमानों की करीब 20 फीसदी हिस्सेदारी है। जबकि बसपा 25.45 प्रतिशत टिकट मुस्लिमों को दे चुकी है। दूसरी ओर गठबंधन ने अब तक घोषित 72 सीटों में से सात टिकट ही मुसलमानों को दिए हैं। यह 10 प्रतिशत भी नहीं है। बसपा ने भाजपा के कोर वोटर ब्राह्मणों में से भी 11 को टिकट दिए हैं। राजनीतिक विश्लेषक डॉ. अमित उपाध्याय कहते हैं कि गठबंधन मुस्लिम वोट लेकर अपनी सीटें बढ़ाने पर ध्यान देता दिख रहा है। गठबंधन के नेताओं का बसपा को भाजपा की बी टीम बताना रणनीतिक सियासी शरारत की तरह है, जिससे मुसलमानों को टिकटों में कम हिस्सेदारी की ज्यादा चर्चा न हो पाए। मायावती ने भाजपा के कई चर्चित चेहरों के सामने अपने रणनीतिक कैंडिडेट उतारकर गठबंधन के नेताओं के आरोपों से पिंड छुड़ाने और भाजपा की बी टीम होने की धारण को तोड़ने की कोशिश की है। करीब 10 सीटों पर बसपा, भाजपा की चुनौती बढ़ाई है।

जौनपुर लोकसभा सीट का पिछला चुनाव भाजपा हार गई थी। इस सीट को निकालने के लिए भाजपा ने कृपा शंकर सिंह को टिकट दिया है। कृपा शंकर महाराष्ट्र में कांग्रेस सरकार में मंत्री रहे और मूल रूप से जौनपुर के ही रहने वाले हैं। अब मायावती ने ठाकुर समाज के ही बाहुबली धनंजय सिंह की पत्नी श्रीकला सिंह को टिकट दे दिया। धनंजय जेल में हैं। श्रीकला जौनपुर जिला पंचायत की अध्यक्ष हैं। समाजवादी पार्टी ने यहां से बाबू सिंह कुशवाहा को टिकट दिया है। एक जमाने में बाबू सिंह मायावती के आंख-कान होते थे। मेरठ में भाजपा ने अपने सिटिंग सांसद का टिकट काटकर टीवी सीरियल रामायण में राम की भूमिका निभाने वाले अरुण गोविल को प्रत्याशी बनाया है। भाजपा त्यागी समाज को अपने समर्थन में मानती रही है। कई त्यागी नेताओं को महत्वपूर्ण पद और प्रतिष्ठा से नवाजा है। मायावती ने मेरठ से देवव्रत त्यागी को प्रत्याशी बनाकर भाजपा के कोर वोटबैंक में सेंध लगाने की चाल चल कर टेंशन बढ़ा दी है। बस्ती में भाजपा ने अपने सिटिंग सांसद हरीश द्विवेदी को फिर टिकट दिया है। बसपा ने ब्राह्मण समाज से ही दयाशंकर मिश्र को टिकट देकर भाजपा की पेशानी पर बल ला दिया है। यहां सपा ने एक बार फिर पूर्व मंत्री राम प्रसाद चौधरी को उतारा है। चौधरी बसपा सरकार में मंत्री हुआ करते थे और मायावती के खास लोगों में गिनती होती थी। आजमगढ़ में सपा मुखिया अखिलेश यादव के चचेरे भाई धर्मेंद्र यादव मैदान में हैं। भाजपा ने यहां से अपने मौजूदा सांसद दिनेश लाल यादव निरहुआ को उतारा है। यहां राजभर समाज की अच्छी तादाद है। इस समाज को साधने के लिए भाजपा ने ओमप्रकाश राजभर की पार्टी सुभासपा से गठबंधन किया है। पर, बसपा ने अपने पूर्व प्रदेश अध्यक्ष भीम राजभर को आजमगढ़ से उतार कर भाजपा के समीकरण की चुनौती बढ़ा दी है।

टिकट वितरण में अपनो को तरजीह देने से नेता नाराज, सपा के अंदर उठ रहे सवाल

अंसतोष थामने को क्या करेंगे अखिलेश?

लखनऊ, एजेंसी। सपा ने दूसरे दलों से आए नेताओं पर ज्यादा भरोसा जताया है। आधे से ज्यादा पार्टी प्रत्याशी बसपा, भाजपा या कांग्रेस पृष्ठभूमि वाले हैं। पार्टी के अंदर सवाल उठने लगे हैं। अंसतोष थामने को रणनीति बनानी होगी। सपा ने लोकसभा टिकट देने में दूसरे दलों से आए नेताओं पर ज्यादा भरोसा जताया है। यूपी में उसके अब तक घोषित प्रत्याशियों में आधे से ज्यादा बसपा, भाजपा या कांग्रेसी पृष्ठभूमि के हैं।

सपा में अंदरखाने इस स्थिति पर सवाल उठने लगे हैं। पार्टी के हमदर्दों का कहना है कि इस असंतोष को थामने के लिए शीघ्र ही कारगर कदम उठाने की जरूरत है। उत्तर प्रदेश में सपा अभी तक अपने सिंबल पर 57 प्रत्याशी घोषित कर चुकी है, इनमें से 29 प्रत्याशी दूसरे दलों की यात्रा तय करके सपा में आए हैं। श्रावस्ती से सपा प्रत्याशी राम शिरोमणि वर्मा और गाजीपुर से प्रत्याशी अफजाल अंसारी बसपा के सांसद हैं। सलेमपुर से प्रत्याशी बनाए गए रमाशंकर राजभर वर्ष 2009 में बसपा के टिकट पर लोकसभा चुनाव जीते थे। जौनपुर के प्रत्याशी बाबू सिंह कुशवाहा बसपा सरकार में कद्दावर मंत्री रहे हैं। लालगंज सुरक्षित सीट से प्रत्याशी बनाए गए दरोगा सरोज भाजपा से सपा में आए हैं। कुशीनगर के प्रत्याशी अजय प्रताप सिंह उर्फ पिंटू सैंथवार के पिता जन्मेजय सिंह दो बार देवरिया सदर सीट से भाजपा के विधायक रह चुके हैं। पिंटू खुद विधानसभा उपचुनाव सुभासपा के टिकट पर लड़ चुके हैं। बस्ती के प्रत्याशी राम प्रसाद चौधरी भी बसपा पृष्ठभूमि के हैं। डुमरियागंज के सपा प्रत्याशी भीष्म शंकर कुशल तिवारी संतकबीरनगर से बसपा के सांसद रह चुके हैं। इसी तरह से अम्बेडकरनगर के प्रत्याशी लालजी वर्मा बसपा सरकार में मंत्र रह चुके हैं। फूलपुर से प्रत्याशी बनाए गए अमरनाथ मौर्य भी बसपा पृष्ठभूमि के हैं और स्वामी प्रसाद मौर्य के साथ सपा ज्वॉइन की थी।

रामनवमी: मन प्रफुल्लित कर देंगी अयोध्या की तस्वीरें, राममंदिर, हनुमान गढ़ी, सरयू तट पर हजारों लोगों की भीड़

अयोध्या, एजेंसी। रामनवमी के मौके पर आस्था का सैलाब अयोध्या में उमड़ पड़ा। रामलला के दर्शन के लिए लाखों भक्त अयोध्या में हैं। एक अनुमान के मुताबिक करीब पांच लोग आज अयोध्या आएंगे। मंदिर के पट आज सुबह साढ़े तीन बजे से खोल दिए गए। भक्तों के दर्शन का अनवरत सिलसिला शुरू हो गया। रात 11 बजे रामलला अपने भक्तों को दर्शन देंगे।

डूंगरपुर केस में आजम ने दाखिल की गवाहों की सूची, अब 22 को होगी सुनवाई, एक मामले में हो चुकी सजा

रामपुर, एजेंसी। रामपुर की एक अदालत में डूंगरपुर मामले की सुनवाई हुई। सीतापुर जेल में बंद आजम खां वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिये पेश हुए। उन्होंने कोर्ट में गवाहों की सूची पेश की। इसकी सुनवाई 22 अप्रैल को होगी। डूंगरपुर के एक मामले में मंगलवार को सीतापुर जेल में बंद सपा नेता आजम खां की ओर से गवाहों की सूची और सुबूत कोर्ट में पेश किए गए। अब इस मामले की सुनवाई 22 अप्रैल को होगी। सुनवाई के दौरान आजम खां सीतापुर जेल से वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिये पेश हुए। गंज थाना क्षेत्र की डूंगरपुर बस्ती को खाली कराने के नाम पर मारपीट, लूटपाट, डकैती जैसे संगीन आरोप लगाते हुए बस्ती के लोगों ने 12 केस दर्ज कराए थे। जिसमें तीन मुकदमों में कोर्ट अपना फैसला सुना चुकी है। एक मामले में सपा नेता आजम खां को सात साल की कैद हुई है और दो मामलों में वह बरी हो चुके हैं। इसी तरह के एक अन्य मामले में सुनवाई कोर्ट में हो रही है। इस मामले में सपा नेता आजम खां के साथ ही उनके मीडिया प्रभारी रहे फसाहत अली खां शानू, ठेकेदार बरकत अली, शावेज खां, इमरान, इकराम, सज्जाद को आरोपी बनाया गया था। यह मामला कोर्ट में विचाराधीन है। मंगलवार को इस मामले में सुनवाई हुई। सुनवाई के दौरान आजम खां के अधिवक्ता ने गवाहों की सूची दाखिल करने के साथ ही बचाव में दस्तावेजी साक्ष्य पेश किए। कोर्ट ने अब इस मामले की सुनवाई के लिए 22 अप्रैल की तारीख तय की है।

बाहुबली धनंजय सिंह कभी खुद लड़े तो कभी पत्नी को लड़ाया... 22 साल से जौनपुर की सियासत में बने हैं एक धुरी

जौनपुर, एजेंसी। जौनपुर की सियासत में बाहुबली धनंजय सिंह कभी खुद चुनाव लड़े तो कभी पत्नी को चुनाव लड़ाया। उन्होंने हर विधानसभा और लोकसभा चुनाव में भाग्य आजमाया।

धनंजय अब तक तीन बार लोकसभा और सात बार विधानसभा का चुनाव लड़ चुके हैं। पूर्व सांसद धनंजय सिंह की बीते दो दशक से जौनपुर की सियासत में सीधी पैठ है। कभी वह खुद तो कभी अपनी पत्नी को यहां से चुनाव लड़ते-लड़ाते रहे हैं। 2002 के बाद 2019 में पहला मौका था जब धनंजय या उनके परिवार का कोई सदस्य चुनाव नहीं लड़ा। इसके अलावा उन्होंने हर विधानसभा और लोकसभा चुनाव में भाग्य आजमाया।

धनंजय अब तक तीन बार लोकसभा और सात बार विधानसभा का चुनाव लड़ चुके हैं। बहरहाल, धनंजय सिंह की पत्नी जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीकला रेड्डी को बसपा से टिकट मिलने से जौनपुर की सीट पर चुनावी घमासान तेज हो

गया है। 15 साल पहले 2009 में धनंजय सिंह ने बसपा के टिकट पर चुनाव लड़ा था और जीत दर्ज करने में कामयाब हुए थे। बाद में उनके बगावती तेवर के चलते बसपा ने पार्टी से बाहर का रास्ता दिखा दिया था। इसके बाद से धनंजय या उनकी पत्नी कोई भी विधानसभा या लोकसभा चुनाव नहीं जीत पाए। लंबे समय बाद एक बार फिर बसपा का साथ मिलने पर इनकी पत्नी श्रीकला चुनावी रण में हैं।

यूपीएससी में मेधा को मिला यश, अफसर बने बरेली के तीन होनहार, शोहम की 77वीं रैंक

बरेली, एजेंसी। संघ लोक सेवा आयोग (यूपीएससी) की परीक्षा में इस बार भी रुहेलखंड के होनहारों ने सफलता का परचम लहराया है। शोहम टीबडेवाल ने 77वीं, बहेड़ी के केशवपुरम निवासी निर्देश गंगवार ने 360वीं और महानगर निवासी 22 साल के यश वर्धन सिंह ने 571वीं रैंक हासिल की है। इसके अलावा मंडल के अन्य जिलों के होनहारों ने भी मेधा का लोहा मनवाया है। उनकी इस सफलता से परिवार में खुशी का माहौल है। बरेली के माधोबाड़ी निवासी शोहम टीबडेवाल ने दूसरे प्रयास में सिविल सेवा परीक्षा में 77वां स्थान हासिल कर शहर का नाम रोशन किया है। फिलहाल, वह दिल्ली में हैं। लोग सोशल मीडिया पर उनको बधाई दे रहे हैं। उनके घर भी बधाई देने वालों का तांता लगा हुआ है। उनके पिता अनुपम टीबडेवाल व्यवसायी व माता सीमा गृहिणी हैं।

नौकरी छोड़ की ऑनलाइन तैयारी, मिली 77वीं रैंक: उन्होंने सेंट फ्रांसिस स्कूल से 10वीं और वुडरो स्कूल से 12वीं करने के बाद पहले ही प्रयास में आईआईटी जेईई पास की। आईआईटी मुंबई से वर्ष 2020 में सिविल इंजीनियरिंग से बीटेक कर गुरुग्राम में जॉब भी की। कोरोना महामारी के दौरान उन्होंने नौकरी छोड़ दी। उन्होंने पहले प्रयास में परीक्षा पास की तो उनका चयन रेलवे में हुआ था। इस बार दूसरे प्रयास में 77वीं रैंक हासिल हुई है। अब उनका चयन आईएएस के लिए हुआ है। वह बताते हैं निरंतर पढ़ाई की जाए तो सफलता जरूर मिलती है। पिता ने बताया कि बेटे की इस उपलब्धि ने गौरवान्वित किया है।

सफलता का मंत्र: शोहम के शिक्षक रहे केबी त्रिपाठी ने बताया कि अपने सपने को हासिल करने के लिए उन्होंने सिविल सेवा की ऑनलाइन तैयारी की। 16 घंटे पढ़ाई की। समयसारणी बनाकर प्रत्येक विषय की तैयारी की। जिन विषयों में संशय था, उनके लिए अधिक समय दिया।

बेटी की शादी से पहले पिता ने दी जान, मई में बिटिया की आएगी बरात

नहीं हो पाया था रुपयों का इंतजाम

शाहजहांपुर, एजेंसी। शाहजहांपुर के कांट क्षेत्र में मंगलवार को एक किसान का शव पेड़ पर फंदे से लटका मिला। परिजनों के मुताबिक मई में बेटी की शादी है। इसके लिए रुपयों का इंतजाम नहीं हो पाने से किसान परेशान था। उस पर बैंक का कर्ज भी था। शाहजहांपुर के कांट क्षेत्र में गांव कमलनैनपुर निवासी रामआसरे (56) ने फंदे से लटककर जान दे दी। परिजनों के मुताबिक, मई में होने वाली बेटी की शादी के लिए धन की व्यवस्था न होने से वह परेशान थे। उन पर बैंक का कर्ज भी था।

रामआसरे के पास पांच बीघा जमीन थी। वह खेती करने के साथ ही ऑटो चलाते थे। सोमवार शाम परिवार के लोग खेत पर चले गए, तब वह घर से निकल गए। रातभर घर नहीं लौटे। सुबह करीब सात बजे उनका शव गांव के बाहर आम के पेड़ में रस्सी के सहारे फंदे से लटका मिला। सीओ सदर अमित चौरसिया व थाना प्रभारी दयाशंकर ने मौका-मुआयना किया। फॉरेंसिक टीम ने साक्ष्य जुटाए। परिजनों ने बताया कि रामआसरे ने अपनी बेटी की शादी जलालाबाद में तय की थी। मई में शादी होनी थी। रुपयों का इंतजाम नहीं हो पा रहा था। बैंक से लिए एक लाख 40 हजार रुपये के फसली ऋण की किस्त अदा नहीं करने के चलते नोटिस भी आ चुका था।

सामूहिक विवाह योजना में नहीं आया था नाम

परिजनों ने बताया कि बेटी की शादी करने के लिए मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजना में आवेदन किया था। उसमें नाम नहीं आ सका था। हालांकि, नाम न आने का कारण उन्हें नहीं पता। रामआसरे अपने पीछे बेटी मोना, महिमा, संजना और काव्या व एक बेटा शिवांशु को छोड़ गए हैं।

सीओ सदर अमित चौरसिया ने बताया कि रामआसरे पर बैंक का कर्ज होने की बात सामने आई है। शव को पोस्टमार्टम के बाद परिजन के सुपुर्द कर दिया।

चुनावी मैदान में मौलाना तौकीर रजा ने मांगा नोइयूज, बरेली से चुनाव लड़ने की अटकलें

बरेली, एजेंसी। मौलाना तौकीर रजा दूसरी बार लोकसभा चुनाव में उतरने की तैयारी में हैं। उनकी ओर से इस बात के संकेत दिए जा रहे हैं। उनके करीबियों की मानें तो वे 19 अप्रैल को नामांकन दाखिल कर सकते हैं। बरेली दंगों के मुख्य आरोपी और इत्तेहाद-ए-मिल्लत काउंसिल (आईएमसी) प्रमुख मौलाना तौकीर रजा खां बरेली के चुनावी मैदान में भाग्य आजमा सकते हैं। उच्चतम न्यायालय से निचली अदालतों के आदेशों पर रोक से मिली राहत के बाद मौलाना सियासी राह पर आगे बढ़ने की तैयारी में हैं। गुपचुप तरीके से नामांकन की तैयारी के लिए उनकी ओर से नगर निगम में प्रार्थना पत्र के साथ शपथ पत्र देकर नो-ड्यूज सर्टिफिकेट मांगा गया है। आईएमसी प्रमुख मौलाना तौकीर दूसरी बार चुनाव में उतरने की तैयारी में हैं। उनकी ओर से इस बात के संकेत दिए जा रहे हैं। उनके करीबियों की मानें तो वे 19 अप्रैल को नामांकन दाखिल कर सकते हैं। दरअसल, मौलाना और सियासत का नाता बेहद पुराना है। करीब दो दशक पहले बदायूं लोकसभा सीट से मौलाना सियासत में पटखनी खा चुके हैं। उनके पिता रेहान रजा खां ने मुस्लिम समुदाय के मामलों को उठाने के लिए आईएमसी का गठन किया था। वर्ष 2000 में आईएमसी की कमान मौलाना को मिली।